

RK EXPERT CLASSES 8292929627

यह NOTES PDF [RK EXPERT CLASSES] Raju Sir के द्वारा तैयार किया गया है। इसमें कक्षा 10 के [Hindi] सबसे महत्वपूर्ण सभी प्रश्न लघुउत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का उत्तर लिखा गया है जो 2026 बोर्ड परीक्षा में भी पूछा जाएगा है वह सबसे महत्वपूर्ण है आप इन प्रश्नों को विशेष ज्यादा ध्यान देकर याद कर लेते हैं। तो सभी प्रश्न निश्चित रूप से इसी में से रहेगा, धन्यवाद By Raju Sir (RK EXPERT CLASSES)

YouTube Channel	Click Here
WhatsApp Channel	Join

1041

SECONDARY SCHOOL EXAMINATION - 2026

माध्यमिक स्कूल परीक्षा - 2026

(ANNUAL / वार्षिक)

HINDI (MT)

मातृभाषा हिन्दी

प्रश्न पुस्तिका सेट कोड
Question Booklet
Set Code**A**प्रश्न पुस्तिका क्रमांक
Question Booklet Serial No.

110- 0027131

विषय कोड :

Subject Code :

101**201**

कुल प्रश्न : 100 + 6 = 106

Total Questions : 100 + 6 = 106

(समय : 3 घंटे 15 मिनट)

[Time : 3 Hours 15 Minutes]

कुल मुद्रित पृष्ठ : 24

Total Printed Pages : 24

(पूर्णांक : 100)

[Full Marks : 100]

परीक्षार्थियों के लिये निर्देश :

1. परीक्षार्थी OMR उत्तर पत्रक पर अपना प्रश्न पुस्तिका क्रमांक (10 अंकों का) अवश्य लिखें।
2. परीक्षार्थी घयासंपन्न अपने शर्णी में ही उत्तर हैं।
3. दाहिमी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निश्चित करते हैं।
4. प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए परीक्षार्थियों को 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया गया है।
5. यह प्रश्न पुस्तिका दो खण्डों में है — खण्ड-अ एवं खण्ड-ब।
6. खण्ड-अ में 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं, जिनमें से किन्हीं 50 प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। पर्यास में अधिक प्रश्नों के उत्तर देने पर प्रथम 50 उत्तरों का ही मूल्यांकन किया जाएगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक मिधारित है। सही उत्तर को उपलब्ध कराये गये OMR उत्तर पत्रक में लिखे गये सही विकल्प को नीले / काले बोल पेन से चिह्नित करें। किसी भी प्रकार

1. जातिप्रथा भारत के बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण कैसे बनी हुई है?

[2017AII, 2021A1, 2022AII]

उत्तर - भीमराव अंबेदकर ने 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' में लिखा है कि जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्व निर्धारित ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशों में बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो भूखे मरने के अलावा क्या रह जाता है। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

2. भारतीय समाज में जाति श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप क्यों नहीं कही जा सकती?

[2023AII]

उत्तर- भीमराव अंबेदकर ने 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' शीर्षक निबंध में भारत में व्याप्त जाति प्रथा की निंदा की है। जाति भारतीय समाज में श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप नहीं कही जा सकती है। यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। यह प्रथा पेशे की स्वतंत्रता का गला घोट देती है। यह एक दूषित प्रथा हो गयी है। स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व का यह प्रथा हनन करती है।

3. खोखा किन मामलों में अपवाद था ?

उत्तर:-सेन साहब का बेटा काशु (खोखा) घर में बनाए गए नियम के मामलों में अपवाद था। वह हमेशा अपने मन के अनुसार ही कार्य करता था पर लड़कियों को ऐसी आजादी नहीं थी।

4. सीता का चरित्र-चित्रण करें।

[2011C, 2013C]

उत्तर- 'धरती कब तक घूमेगी' (साँवर दइया) की सीता एक विधवा नारी थी। वह अत्यन्त सहनशील थी। बहुएँ हर समय विषपूर्ण बातें उससे बोलती थी। वह सबकुछ सह लेती थी। वह एकांकी पड़ती गयी। बेटों ने एक-एक महीने की पाली पर रखा तो उसे कोई आपत्ति नहीं हुई। जब 50-50 रुपये प्रति माह देने पर तीनों बेटे राजी हुए तो उसका स्वाभिमान जाग उठा। वह अपना बोरिया-बिस्तर लेकर घर से निकल पड़ी। सीता एक आदर्श माँ थी।

5. विष के दाँत कहानी का नायक कौन है? तर्क पूर्ण उत्तर दें।

[2014A1,2017A1,2022AII]

उत्तर-आचार्य नलिन विलोचन शर्मा की कहानी 'विष के दाँत' का नायक मदन है। काशू इस कहानी का मुख्य पात्र है जो कहानी के आरंभ से अंत तक छाया रहता है। वह जीवन के नियमों का अपवाद था। उसे अपने पिता की अमीरी का घमंड था। मदन एक गरीब किन्तु निर्भीक और जीवट प्रवृत्ति का लड़का है। वह आत्म सम्मान प्रिय बालक है, इसी कारण वह झाड़वर की बातों का प्रतिरोध करता है। मदन ही काशू के घमंड रूपी विष के दाँत को तोड़ता है

6. बहादुर अपने घर से क्यों भाग गया था

उत्तर:- एक बार बहादुर ने अपनी माँ की प्यारी भैंस को बहुत मारा। माँ ने भैंस की मार का काल्पनिक अनुमान करके एक डंडे से उसकी दुगुनी पिटाई की। लड़के का मन माँ से फट गया और वह चुपके से 2 रुपया लिया और घर से भाग गया।

7. लेखक अमरकांत को क्यों लगता है कि नौकर रखना बहुत जरूरी हो गया है? अथवा, किन कारणों से बहादुर ने एक दिन लेखक का घर छोड़ दिया? 'बहादुर' शीर्षक कहानी के अनुसार लिखें।

[2024AII]

उत्तर- एक दिन लेखक के घर आए रिश्तेदार ने बहादुर पर रुपये चोरी का आरोप लगा देता है। गलत आरोप के कारण बहादुर इनकार कर दिया फिर भी उसे डराया-धमकाया और पीटा जाता है। इस घटना के बाद बहादुर काफी डाँट-मार खाने लगा। घर के सभी लोग कुत्ते की तरह दुरदुराया करते। किशोर तो जैसे उसकी जान के पीछे पड़ गया था। ईमानदार बहादुर को इस घटना पर अत्यन्त क्षोभ होता है और वह लेखक का घर छोड़कर चला जाता है।

8. बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज अपनी माँ को क्यों मानते थे?

[2018A1]

उत्तर-पिता जी के निधन के बाद बिरजू महाराज को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा हाथ उनकी माँ का था। जब भी अम्मा नाच देखती थी तो बिरजू महाराज पूछते थे कि कहीं गलत तो नहीं कर रहा हूँ? बाबू जी वाला ढंग है या नहीं। कहीं गड़बड़ी तो नहीं हो रही। तब अम्मा बताती थी, तुम अपने बाबू जी की तस्वीर हो। इस प्रकार अम्मा इनका उत्साहवर्धन करते रहती थी। इसलिए बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज अपनी माँ को मानते थे

9. मछली और दीदी में क्या समानता दिखलाई पड़ी? स्पष्ट करें।

[2013A]

उत्तर-आदमी के चपेट में आने पर मछली कटने के लिए मजबूर थी। पानी नहीं रहने के कारण गमछे में लिपटी मछली लहरा रही थी। दीदी कमरे में करवट लिए पहनी हुई साड़ी को सिर से ओढ़े सिसक-सिसक कर रो रही थी। हिचकी लेते हुए दीदी का पूरा शरीर सिहर रहा था।

10. शिक्षा का ध्येय गाँधीजी क्या मानते थे और क्यों? [2012A, 2022AII]

उत्तर-शिक्षा का ध्येय गाँधीजी चरित्र-निर्माण को मानते हैं। यह साक्षरता से ज्यादा महत्वपूर्ण है, किताबी ज्ञान तो उस बड़े उद्देश्य का एक साधन मात्र है।

गाँधीजी का मानना है कि अगर हम व्यक्ति चरित्र निर्माण करने में सफल हो जाएँगे तो समाज अपना काम आप संभाल लेगा। इस प्रकार जिन व्यक्तियों का विकास हो जाएगा, उनके हाथों में समाज के संगठन का काम सौंपा जा सकता है।

11. गाँधीजी बढ़िया शिक्षा किसे कहते हैं? 'शिक्षा और संस्कृति' पाठ के अनुसार लिखें।

(2024A1)

उत्तर- अहिंसक प्रतिरोध को गाँधीजी सबसे उदात्त और बढ़िया शिक्षा कहते हैं। उनके अनुसार यह शिक्षा बच्चों को मिलनेवाली साधारण अक्षर-ज्ञान की शिक्षा के बाद नहीं पहल होनी चाहिए।

12. कवि किसके बिना जगत् में जन्म व्यर्थ मानता है?

[2016A1,2022AI]

उत्तर-निर्गुण ब्रह्म उपासक गुरु नानक 'राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा' शीर्षक कविता में राम नाम की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि ईश्वर की महिमा अपरमपार है। नाम-कीर्तन से बढ़कर कोई धर्म साधना नहीं है। इसलिए राम नाम के बिना जगत् में मनुष्य जन्म व्यर्थ है। राम नाम लेने से ही ईश्वर एवं ईश्वरत्व की प्राप्ति होती है।

13. कृष्ण को चोर क्यों कहा गया है? कवि का अभिप्राय स्पष्ट करें।

[2015A11,2022AI]

उत्तर-कवि रसखान कृष्ण और राधा के सुंदर और मोहक छवि का बखान करते हुए कहते हैं कि उनके मनमोहक छवि को देखकर मन पूर्णतः मनमुग्ध हो गया है। यह लगता है कि यह शरीर मन और चित्त रहित हो गया है। अब उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता केवल कृष्ण ही उनके स्मृति पटल पर अंकित रहते हैं। इसलिए चित्त को हरने वाले कृष्ण को चोर कहा गया है।

14. कवि अपने आँसुओं को कहाँ पहुँचाना चाहता है और क्यों

उत्तर:- कवि अपनी प्रेमिका सुजान के लिए विरह-वेदना को प्रकट करते हुए बादल से अपने प्रेम रूपी आँसुओं को पहुँचाने के लिए कहता है। वह अपने आँसुओं को सुजान के आँगन में पहुँचाना चाहता है, क्योंकि वह उसकी याद में पीड़ित है और अपनी व्यथा के आँसुओं से प्रेमिका को भिगो देना चाहता है।

15. छायाएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती हैं? स्पष्ट करें।

[2012C, 2014All,2021BM]

उत्तर-परमाणु बम के विस्फोट से जो अग्नि पैदा होती है उसका प्रकाश अनंत होता है। धरती के मनुष्य जल जाते हैं। कोई नहीं बचता है। मनुष्य की कोई छाया बनती नहीं या बनती है तो वह दिशाहीन होती है। मनुष्य भाप बन जाता है। हाँ, प्राकृतिक सूर्य के उगने से छायाएँ बनती हैं। उनकी दिशा और लम्बाई होती है।

16. कवि जीवनानंद दास किस तरह के बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात करते हैं?

[2024AII]

उत्तर-कवि जीवनानंद दास को अपनी मातृभूमि से असीम प्रेम है। उनकी उत्कट, इच्छा मातृभूमि पर पुनर्जन्म की है। वे कवि बंगाल के उस अनुपम, सुशोभित एवं रमणीय धरती पर एक दिन लौटकर आने की बात करते हैं जहाँ धान के खेत हो, जहाँ बहती नदी का किनारा हो और जहाँ भोर की सुनहली किरणें हों।

17. कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार क्यों लगता था ?

उत्तर:- कवि एक वृक्ष के बहाने प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं पर्यावरण की रक्षा की चर्चा की है। वृक्ष मनुष्यता, पर्यावरण एवं सभ्यता की प्रहरी है। यह प्राचीनकाल से मानव के लिए वरदानस्वरूप है, इसका पोषक है, रक्षक है। इन्हीं बातों का चिंतन करते हुए कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार लगता था

18. मैक्समूलर की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन कहाँ हो सकते हैं और क्यों?

उत्तर-मैक्समूलर की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई जैसे शहरों में नहीं, भारत के गाँवों में हो सकते हैं, क्योंकि इसकी सर्वाधिक आबादी गाँवों में बसती है। वहीं हार्दिक संपन्नता और आर्थिक विपन्नता है। धर्म और इतिहास के अवशेष वहीं सुरक्षित हैं।

19. धर्म की दृष्टि से भारत का क्या महत्व है? 'भारत से हम क्या सीखें' पाठ के आधार पर बतायें।

उत्तर-धर्म की दृष्टि से भारत अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसलिए कि धर्म के उद्भव और उसके नष्ट होनेवाले रूप का यहाँ प्रत्यक्ष ज्ञान यहाँ होता है। यह वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म की जन्मभूमि है तो इस्लाम और ईसाई धर्म की शरणस्थली भी है। यहाँ विभिन्न धर्मावलम्बी सदियों से हिलमिल कर रहते हैं। मत-मतान्तर यहाँ प्रकट और विकसित होते हैं।

20. काशू और मदन के बीच झगड़े का क्या कारण था?

उत्तर-काशू और मदन के बीच झगड़े का कारण काशू की लट्टू खेलने की ललक और मदन द्वारा उसे खेलाने से इनकार करना था। लेखक इसके द्वारा बच्चों की ईर्ष्या और इनकार दिखाना चाहता है।

21. मनुष्य बार-बार नाखूनों को क्यों काटता है? 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' शीर्षक पाठ के अनुसार लिखें।

[2024AII]

उत्तर-नाखून, मनुष्य के पाशवी वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं। मनुष्य अपनी पशुता को जितनी बार काट दें वह मरना नहीं जानती। इसके नाखून आज भी बढ़ रहे हैं। यह मनुष्य के पशुत्व का प्रमाण है। अपने नाखून को बार-बार काटने की प्रवृत्ति उसके मनुष्यता की निशानी है। मनुष्य के भीतर बर्बर युग का कोई अवशेष रह न जाए इसलिए मनुष्य अपने नाखून को बार-बार काटता है।

22. देवनागरी लिपि में कौन-कौन सी भाषाएँ लिखी जाती हैं?

[2016A1, 2021BM, 2022AII]

उत्तर-देवनागरी लिपि में हिंदी, हिंदी की विविध बोलियाँ, नेपाली, नेवारी एवं मराठी भाषाएँ लिखी जाती हैं।

23. परम्परा ज्ञान किनके लिए आवश्यक है और क्यों?

उत्तर- जो लोग साहित्य में युग परिवर्तन चाहते हैं, जो लकीर के फकीर नहीं हैं और जो रुढ़ियाँ तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य की रचना करना चाहते हैं, उनके लिए साहित्य की परम्परा का ज्ञान जरूरी है। ऐसा इसलिए कि साहित्य की परम्परा के ज्ञान से ही प्रगतिवादी दृष्टिकोण विकसित होता है और परिवर्तन-मूलक साहित्य का जन्म होता है।

24. डुमराँव की महत्ता किस कारण से है?

उत्तर- डुमराँव की महत्ता दो कारणों से है। पहली तो यह कि इसके आस-पास की नदियों के कछारों में 'रीड'-'नरकट' नामक एक प्रकार की - घास पाई जाती है जिसका प्रयोग शहनाई बजाने में किया जाता है। दूसरा कारण यह है कि शहनाई के शाहंशाह बिस्मिल्ला खाँ का यह पैतृक निवास है। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन यहीं के थे और इनके खानदान के लोग शहनाई बजाते थे।

25. परहित के लिए देह कौन धारण करता है? स्पष्ट कीजिए।

[2024AI]

उत्तर-परहित के लिए देह बादल धारण करता है। बादल जल की वर्षा करके सभी प्राणियों में जीवन संचार करता है, जिससे सुख-चैन मिलता है। बादल की वर्षा उसके विरह के आँसू के प्रतीक स्वरूप है। उसके विरह के आँसू अमृत की वर्षा करते हैं। जिसकी एक-एक बूंद दूसरे को समर्पित कर देता है अपने लिए कुछ भी नहीं रखता। वह सब कुछ लुटा देता है, बदले में कुछ नहीं लेता। वह निःस्वार्थ है, उसका देह परहित के लिए है।

26. कवि ने 'डफाली' किसे कहा है और क्यों? [2011A, SENTUP2020]

उत्तर-'स्वदेशी' शीर्षक कविता के रचयिता बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' (1885-1922 ई०) ने अंगरेज प्रशंसक एवं अंगरेजियत पसन्द करने वाले लोगों को डफ बजाने वाला या डफाली कहा है। ये लोग अंगरेजों की खुशामद करते थे, उनकी झूठी प्रशंसा करते थे। ये लोग दास-वृत्ति और नौकर वृत्ति अपना ली थी। चारों वर्ण के लोग इसमें सम्मिलित थे। अपने कपड़े ये ठीक से नहीं पहन पाते थे। वे देश का ख्याल कैसे करेंगे?

27. 'भारतमाता' कविता में कवि भारतवासियों का कैसा चित्र खींचता

[2013A, 2022AII]

उत्तर- 'भारतमाता' कविता में कवि ने दर्शाया है कि परतंत्र भारत की स्थिति दयनीय हो गई है। भारतमाता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई है। यहाँ, की तीस करोड़ जनता शोषित-पीड़ित, भूखे पेट, नग्न बदन है। भारत का सिर झुका हुआ है। जनता असभ्य, अशिक्षित, निर्धन एवं वृक्षों के नीचे निवास कर रही है। इस कविता में कवि गुलामी की त्रासदी और वेदना में पड़ी भारतमाता का चित्र खींचा है

28. भारतमाता अपने ही घर में प्रवासिनी क्यों बनी हुई हैं?

[2019AI,SENTUP EX-2020]

उत्तर- भारतमाता गुलामी के कारण अपने घर में ही प्रवासिनी-प्रदेश में रहनेवाली बनी हुई है। यह कविता गुलाम भारतवर्ष में लिखी गयी थी।

भारतमाता दीनता में जड़ीभूत हैं। उनकी पलकें नहीं गिरती हैं। उनका चित्त झुका हुआ है। मन गिरा हुआ है। मन अवसादग्रस्त है। अधरों पर, ओंठों पर दीर्घकाल से नीरव रोदन-रूलाई धिरक रही है। युगों-युगों के अंधकार से मन विषाक्त हो गया है। वह अपने घर में ही घर-विहीन प्रवासिनी बनी हुई है। भारतमाता के कष्टों को बयान करनेवाली ये पंक्तियाँ भारत की गरीबी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है।

29. भारतमाता का हास भी राहुग्रसित क्यों दिखाई पड़ता है?

[2019AI,2020BM]

उत्तर-जिस प्रकार पूर्ण चन्द्रमा की रात ज्योत्सना को राहु ग्रस कर निस्तेज कर देता है, ठीक उसी प्रकार भारतमाता की हँसी बंद है। वह दुःख, अभाव, गरीबी से ग्रसित है। उसकी आजादी को विदेशियों ने छीनकर गुलाम बना डाला है। ऐसी पराजय, संताप, दुःख और दैन्य के कारण ही भारतमाता की मुस्कुराहट राहुग्रसित दिखायी पड़ती है।

30. कवि प्रेमघन को भारत में भारतीयता क्यों नहीं दिखाई पड़ती?

उत्तर- कवि प्रेमघन जब भारतभूमि पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि चारों ओर लोग अंग्रेजी वेश-भूषा में हैं, रहन-सहन, रीति-रिवाज भी लोगों का विदेशियों जैसा हो गया है, घर-द्वार भी लोग विदेशी-शैली के बनाने लगे हैं। लोगों को हिन्दी बोलने में शर्म और अंग्रेजी में संभाषण करने पर गर्व का बोध होता है। लोग हिन्दुस्तानी नाम से घृणा करते हैं। इस प्रकार, कवि को भारत में कहीं भारतीयता दिखाई नहीं पड़ती।

31. "देवता मिलेंगे खेतों में खलिहानों में" पंक्ति के माध्यम से कवि किस देवता की बात करता है और क्यों?

उत्तर - कवि दिनकर के अनुसार जनतंत्र में प्रजा ही, जनता ही, सब-कुछ होती है। वह राजा होती है। उसी के नाम पर, उसी के हित के लिए, उसके द्वारा अधिकार - प्रदत्त लोग शासन करते हैं। इस प्रकार, प्रजा ही राजा है, जनतंत्र का देवता है। और चूँकि प्रजा किसान और मजदूर है, अतः कवि कहता है कि जनतंत्र के देवता राजप्रासादों, मंदिरों में नहीं मिलेंगे। ये मिलेंगे खेतों में, खलिहानों में, सड़कों पर।

32. हिरोशिमा में मनुष्य की साखी के रूप में क्या है?

[2011C, 2012A, 2020AI]

उत्तर- सच्चिदानंद हीरानन्द वात्सयायन 'अज्ञेय' रचित कविता 'हिरोशिमा' आधुनिक सभ्यता की दुर्दान्त मानवीय विभीषिका का चित्रण करती है। यह कविता आनेवाले युग के लिए एक चेतावनी भी है। हिरोशिमा में मनुष्य का रचा हुआ सूरज परमाणु बम मनुष्य को ही सोख गया।

33. बेटे के आँसू कब आते हैं और क्यों? या सृष्टि-विकास की कथा क्या है?

अथवा, कवियित्री के अनुसार बेटे को आँसू कब आता है और क्यों?

उत्तर-बेटा अक्षर ज्ञान की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ, धीरे-धीरे जब 'ड' लिखना चाहता है तो परेशानी में पड़ जाता है। 'ड' की टेढ़ी-मेढ़ी बनावट उससे सधती नहीं। 'ड' को माँ और बिन्दु (.) को उसकी गोद में बैठा मान लेने पर भी वह लिखने में सफल नहीं होता। वह अनवरत कोशिश करता है किन्तु कामयाब नहीं होता और उसकी आँखों से आँसू निकल आते हैं। किन्तु उसकी असफलता के आँसू उसमें हताशा नहीं, उत्साह पैदा करते हैं और यह उत्साह ही सृष्टि-विकास की कथा है।

34. 'हमारी नींद' कविता में कवि किन का और क्यों जिक्र करता है?

उत्तर-कवि ने अपनी काव्य-रचना 'हमारी नींद' में अनेक अत्याचारियों का उल्लेख किया है। उसकी दृष्टि में वे भी अत्याचारी हैं जो जीवन की, यों ही, अनेक समस्याओं को जन्म देते हैं। इनके बाद कवि उन लोगों को अत्याचारी कहता है, जो तरह-तरह के उन्माद में दंगे करते-कराते हैं। इतना ही नहीं, अपने विरोधी के घर-द्वार को आग के हवाले करते हैं। फिर कवि कहता है कि सत्ता या साम्राज्य विस्तार के लिए नाना प्रकार के बमों का इस्तेमाल कर लोगों का सर्वनाश करनेवाले भी अत्याचारी ही हैं। इनके अलावा कवि उन लोगों को भी अत्याचारियों में शुमार करता है जो अंध-विश्वासों को जन्म देते और गरीबों की धार्मिक भावनाओं का शोषण करते हैं।

35. पाप्पाति कौन थी और वह शहर क्यों लाई गई थी?

उत्तर-पाप्पाति तमिलनाडु के एक गाँव की महिला वल्लि अम्माल की बेटी थी। उसे बुखार आ गया। जब वल्लि अम्माल उसे लेकर गाँव के प्राइमरी हेल्थ सेंटर में दिखाने गई तो वहाँ के डॉक्टर ने अगले दिन सुबह ही जाकर नगर के बड़े अस्पताल में दिखाने को कहा। बस, पाप्पाति को लेकर सुबह की बस से नगर के बड़े अस्पताल में दिखाने पहुँच गई।

36. मंगम्मा की बहू ने विवाद निपटाने में पहल क्यों की? अथवा, बहू ने सास को मनाने के लिए कौन-सा तरीका अपनाया?

उत्तर-बहू को जब पता चला कि रंगप्पा उसकी सास मंगम्मा के पीछे पड़ गया है तो उसके कान खड़े हो गए। कहीं सास के रुपये-पैसे रंगप्पा न ले, इस आशंका से वह बेचैन हो गई। तब उसने योजना बनाई और अपने बेटे से कहा कि जा दादी के पास, तुझे मिठाई देती है न? अगर मेरे पास आया तो पीयूँगी। बस, बच्चा मंगम्मा के पास आकर रहने लगा। मंगम्मा भी उसे चाहती ही थी। एक दिन पोता जिद कर बैठा कि मैं भी बेंगलूर चलूँगा। मंगम्मा क्या करे? माथे पर टोकरा, बगल में बच्चा! मुसीबत हो गई। तब बेटे और बहू ने आकर कहा कि उस दिन गलती हो गई। यूँ कैसे चलेगा? मंगम्मा अब खुशी-खुशी बेटे-बहू के साथ रहने लगी। धीरे-धीरे बहू ने शहर में दही बेचने का धंधा भी अपने हाथ में ले लिया। उसकी मंशा पूरी हो गई।

37. रंगप्पा कौन था और वह मंगम्मा से क्या चाहता था?

उत्तर-रंगप्पा मंगम्मा के गाँव का आदमी था- बड़ी शौकीन तबीयत का। कभी-कभार जूआ-उआ भी खेलता था। जब उसे पता चला कि मंगम्मा बेटे से अलग रहने लगी है तो मंगम्मा के पीछे पड़ गया। एक दिन उससे हाल-चाल पूछा और बोला कि मुझे रुपयों की जरूरत है। दे दो, लौटा दूँगा। मंगम्मा ने जब कहा कि पैसे कहाँ हैं तो बोला कि पैसे यहाँ-वहाँ गाड़कर रखने से क्या फायदा? दूसरे दिन रंगप्पा ने अमराई के पीछे रोक कर बाँह पकड़ ली और कहा-‘जरा बैठो मंगम्मा, जल्दी क्या है?’ दरअसल, रंगप्पा लालची और लम्पट दोनों ही था।

38. मंगम्मा का अपनी बहू के साथ किस बात को लेकर विवाद था?

[2012A, 2014AI, 2017All, 2019A1, 2022All]

उत्तर-मंगम्मा का अपनी बहू के साथ विवाद उसके पोते के मुद्दे पर हुआ। मंगम्मा अपने पोते को बहुत प्यार करती थी। एक दिन उसकी बहू ने अपने बेटे को खूब पीटा। इस पर मंगम्मा बिगड़ गयी। वह बहू को फटकारने लगी। बहू भी गुस्से में आ गयी। दोनों में वाक्-युद्ध शुरू हो गया। उसकी बहू ने साफ शब्दों में कहा कि वह मेरा बेटा उसे मारने का मेरा हक है। उस घर में सास और बहू में स्वतंत्रता की होड़ लगी है। जिसमें बेटे ने भी पत्नी का ही साथ दिया। मंगम्मा का अपनी बहू के साथ विवाद का मुख्य कारण यही है।

39. लक्ष्मी कौन थी और उसका घर कहाँ था? 'ढहते विश्वास' शीर्षक कहानी के अनुसार लिखें। उत्तर-लक्ष्मी 'ढहते विश्वास' शीर्षक कहानी की मुख्य पात्र थी। उसका पति लक्ष्मण कलकत्ता में नौकरी करता था। लक्ष्मी का घर देवी नदी के बाँध के नीचे था।

40. मंगु को उसकी माँ अस्पताल में भर्ती क्यों नहीं करवाना चाहती थी?

[2018All; 2020BM, 2020AI]

उत्तर- माँ की सारी ममता पगली मंगु पर ही निछावर थी। माँ समझती थी कि अस्पताल में कौन उसकी ठीक प्रकार से देखभाल करेगा? कौन उसे भोजन कराएगा? कौन उसे अपने साथ सुलाएगा? कौन उसके पेशाब से भींगे बिस्तर को बदलेगा? माँ से अलग क्या पगली लड़की रह सकेगी? क्या सचमुच में उसकी दवा दारू हो सकेगी? वह ठीक हो जाएगी। मैं उसकी शादी भी कर सकूँगी। पागलखाने में तो एक से एक पागल होते हैं? इनसे रक्षा कौन कर सकेगा? इन्हीं कारणों से माँ का विश्वास मंगु को अस्पताल भेजने पर नहीं था।

41. मंगु को उसकी माँ अस्पताल में भर्ती क्यों नहीं करवाना चाहती थी?

[2018AI; 2020BM,2020AI]

उत्तर- माँ की सारी ममता पगली मंगु पर ही निछावर थी। माँ समझती थी कि अस्पताल में कौन उसकी ठीक प्रकार से देखभाल करेगा? कौन उसे भोजन कराएगा? कौन उसे अपने साथ सुलाएगा? कौन उसके पेशाब से भींगे बिस्तर को बदलेगा? माँ से अलग क्या पगली लड़की रह सकेगी? क्या सचमुच में उसकी दवा दारू हो सकेगी? वह ठीक हो जाएगी। मैं उसकी शादी भी कर सकूँगी। पागलखाने में तो एक से एक पागल होते हैं? इनसे रक्षा कौन कर सकेगा? इन्हीं कारणों से माँ का विश्वास मंगु को अस्पताल भेजने पर नहीं था

42. वल्लि अम्माल ने पाप्पाति के लिए क्या मन्नत मानी ? [2022AI] उत्तर- वल्लि अम्माल ने पाप्पाति के लिए मन्नत मानी कि "पाप्पाति ठीक हो जाएगी तो वैदरीश्वरन जी के मंदिर जाकर दोनों हाथों में रेजगारी भरकर भगवान

43. सीता को किस दिन लगा कि 'लापसी' बिलकुल फीकी है? 'लापसी' खाते समय उसे कैसा महसूस हो रहा था? (2022AI]

उत्तर- सीता के बेटों ने तय किया कि होली के बाद माँ बारी-बारी से सभी के साथ रहेगी। 'नाहरसिंहजी वाले दिन' खाना खातये वक्त सीता को लगा कि 'लापसी' बिलकुल फीकी है। 'लापसी' खाते हुए उसे महसूस हो रहा था कि कौर गले में अटक रहा है।

44. सीता के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।

[2012A, 2013C]

उत्तर- सीता का व्यक्तित्व झुकने वाला नहीं। वह गैर इन्सानियत सहन नहीं कर पाती है। वह कभी इस पतोह के साथ तो कभी उस पतोह के साथ रहना भी उसे पसन्द नहीं था। उसे 50-50 रुपए देने का प्रस्ताव भी नापसन्द था। वह घर छोड़कर स्वतंत्र वायु में श्वास लेने के लिए निकल पड़ती है। सीता एक आदर्श और सिद्धान्त प्रिय महिला थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

45. लेखक किस विडम्बना की बात करते हैं?

उत्तर-लेखक भीमराव अंबेदकर (1891-1956) ने 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' शीर्षक निबंध में श्रम विभाजन के नाम जीवित रखी गयी जाति प्रथा की निंदा की है। उन्होंने लिखा है कि यह विडम्बना की ही बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है और चूँकि जाति प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है। यह जाति प्रथा ऊँच-नीच का विभेद भी करती है। यह निंदनीय है।

46. सेन साहब, मदन, काशू और गिरधर का चरित्र-चित्रण करें।

उत्तर-आचार्य नलिन विलोचन शर्मा की कहानी है- 'विष के दाँत'। शर्मा जी की यह अत्यंत सशक्त और प्रभावशाली कहानी है। "यह कहानी मध्यवर्ग के अनेक अंतर्विरोधों को उजागर करती है। कहानी का जैसा ठोस सामाजिक संदर्भ है, वैसा ही स्पष्ट मनोवैज्ञानिक आशय भी। आर्थिक कारणों से मध्यवर्ग के भीतर ही एक ओर सेन साहब जैसों की एक श्रेणी उभरती है जो अपनी महत्वाकांक्षा और सफेदपोशी के भीतर लिंग-भेद कुसंस्कार छिपाये हुए हैं तो दूसरी ओर गिरधर जैसे नौकरी पेशा निम्न मध्यवर्गीय व्यक्ति की श्रेणी है जो अनेक तरह की थोपी गयी बंदिशों के बीच भी अपने अस्तित्व को बहादुरी एवं साहस के साथ बचाये रखने के लिए संघर्षरत है।

सेन साहब अमीर वर्ग के प्रतिनिधि हैं। वे कार रखते हैं। वे बेटे-बेटियों का पालन-पोषण रईसी के साथ करते हैं। गरीबों के प्रति उनकी संवेदनशीलता शून्य है। वे विष के दाँत रखने वाले काशू के पिता हैं।

मदन इस कहानी का नायक है। वह खोखा की पिटाई कर देता है। वह खोखा के विष के दाँत तोड़ डालता है। इसका उसे जुर्माना भी सहना पड़ता है। झोपड़ी खाली करनी पड़ती है। पिता की नौकरी छूट जाती है। फिर भी नायक मदन को, उसके पिता गिरधर को इसकी परवाह नहीं है।

काशू सेन साहब का बेटा है। वह टेढ़िया है। वह मदन से भिड़ जाता है। लेकिन उसे पिटाई खाना पड़ता है। वह पढ़ता-लिखता नहीं है। उसे ठोकाई सहनी पड़ती है। वह अमीर घर का प्रतिनिधि खलनायक है। नायकत्व प्राप्त करने की क्षमता उसमें नहीं है।

47. लेखक ने नया सिकंदर किसे कहा है? ऐसा कहना उचित है? लेखक का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

[2020All, 2021BM]

उत्तर-मैक्समूलर (1823-1900) ने 'भारत से हम क्या सीखें' शीर्षक आलेख वस्तुतः भारतीय सिविल सेवा हेतु चयनित युवा अंग्रेज अधिकारियों के आगमन के अवसर पर संबोधित भाषणों की श्रृंखला की एक कड़ी है। भाषण में मैक्समूलर ने भारत की प्राचीनता और विलक्षणता पर प्रकाश डाला है। लेखक मैक्समूलर ने इन्हीं प्रशिक्षु अधिकारियों को नया सिकंदर कहा है। उन्हें सर विलियम जोन्स की तरह स्वप्नदर्शी बनने की प्रेरणा दी है। ऐसा कहना (सिकंदर कहना) अत्यंत उचित अंग्रेजों की दृष्टि में है। अधिकारियों को नया सिकंदर कह कर भारत पर विजय एवं भारत की नयी खोज करने को प्रेरित किया है।

48. सप्रसंग व्याख्या करें-

बरसते पानी में खड़े होकर झोले का मुँह आकाश की तरफ फैलाकर मैंने खोल दिया ताकि आकाश का पानी झोले के अंदर पड़ी मछलियों पर पड़े।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ विनोद कुमार शुक्ल रचित कहानी 'मछली' से उद्धृत हैं। 'कहानी एक छोटे शहर के निम्न मध्यवर्गीय परिवार के भीतर के वातावरण, जीवन यथार्थ और संबंधों को आलोकित करती हुए लिंग भेद की समस्या को भी स्पर्श करती है।'

बच्चों ने तीन मछलियाँ बाजार से खरीदीं थीं। बच्चे दौड़ते हुए छोटे रास्ते से जल्दी घर लौटना चाह रहे थे। वे मछलियाँ लिए दौड़ इसलिए रहे थे कि डर लगता था कि मछलियाँ बिना पानी के झोले में ही न मर जाएँ। वे एक मछली पिता जी से कुएँ में पोसने के लिए माँग लेना चाहते थे। अब जोर से पानी गिरने लगा था। बरसते पानी में खड़े होकर झोले का मुँह आकाश की तरफ फैलाकर एक बच्चे ने खोल दिया ताकि आकाश का पानी झोले के अन्दर पड़ी मछलियों पर पड़े। उनमें थोड़ी जान आ जाए। 'मछली' कहानी बाल मनोविज्ञान का वात्सल्यपूर्ण चित्रण करने में सफल है।

49. 'बिस्मिल्ला खाँ का मतलब बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई'-इस रूप में बिस्मिल्ला खाँ का परिचय पठित पाठ के आधार पर दें।

[2024All]

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के शीर्षस्थ कलाकार हैं। शहनाई और शहनाई वादन उनका जीवन है।

बिस्मिल्ला खाँ का मतलब बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई। शहनाई का तात्पर्य-१. बिस्मिल्ला खाँ का हाथ। हाथ से आशय इतना भर कि बिस्मिल्ला खाँ फूँक और शहनाई की जादुई आवाज का असर हमारे सिर चढ़कर बोलने लगता है। उनके शहनाई की मंगल ध्वनि में सरगम भरा है। एक कलाकार के रूप में उन्हें भारतरत्न से लेकर देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानक उपाधियों से अलंकृत किया गया। अपनी अज्ञेय संगीतभाषा के लिए बिस्मिल्ला खाँ भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे।

50. आशय स्पष्ट करें : "मेरा धर्म कैदखाने का धर्म नहीं है।"

[2023AI]

उत्तर-प्रस्तुत गद्यांश महात्मा गाँधी द्वारा रचित 'शिक्षा और संस्कृति' पाठ से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से गाँधीजी भारतीय सनातन धर्म की व्यापकता एवं उदारता को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हमारा धर्म संकीर्ण नहीं है, यह कैदखाने का धर्म नहीं है। यह समन्वय, प्रेम, अपनत्व और आत्मीयता का धर्म है, हमारा धर्म अन्य धर्मों के मानवीय गुणों को आत्मसात् करते हुए ही विकसित हुआ है। हमारी संस्कृति अन्य देशों की अपेक्षा श्रेष्ठ, महान् और आदर्शवादी है।

51. व्याख्या करें :

"मन पावन चित्तचोर, पलक ओट नहीं करि सकौं।"

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति कवि रसखान द्वारा लिखित कविता 'प्रेम-अयनि श्री राधि का' से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि राधा-कृष्ण के रूप सौन्दर्य की विशेषता पर प्रकाश

डाला है। कवि राधा-कृष्ण के प्रेममय रूप पर इतना मुग्ध हो गया है कि उसकी आँखें हर क्षण एकटक उसी रूप को देखती रहती हैं। पवित्र चित्त को चुराने वाले श्रीकृष्ण से पलक हटाने के बाद भी अनायास उस मुख छवि को देखने के लिए विवश हो जाती है। वस्तुतः इसमें कृष्ण के प्रति कवि के प्रेम की अभिव्यंजना है

52. व्याख्या करें :

[2011C, 2012A, SENTUP 2020, 2021BM]

दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो, सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।'

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर (23.09.1908-24.04.1974) रचित कविता 'जनतंत्र का जन्म' से उद्धृत हैं। यह कविता आधुनिक भारत में जनतंत्र के उदय का जयघोष करती है। सदियों की देशी-विदेशी पराधीनता अब खत्म हुई। भारत आजाद हुआ। अब जनता सिंहासन पर बैठेगी।

कवि कहता है कि समय का घर्घर नाद, नवजागरण की आवाज सबको सुननी चाहिए। अब लोग रास्ता प्रशस्त करें। सिंहासन अब खाली करें। अब भारत की जनता राजगद्दी पर बैठेगी।

53. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। एक मक्खी का जीवन-क्रम पूरा हुआ कई शिशु पैदा हुए, और उनमें से कई तो मारे भी गए दंगे, आगजनी और बमबारी में

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी के प्रसिद्ध कवि वीरेन डंगवाल की कविता 'हमारी नींद' से ली गयी हैं। इन पंक्तियों में सुविधाभोगी आरामपसंद जीवन-क्रम का उल्लेख किया गया है। एक मक्खी पैदा होती है, बड़ी होती है और वह अनेक शिशु पैदाकर मर जाती है। यह क्रम लगातार चलता रहता है। वह जीवन के उद्देश्य को नहीं समझती है। यही स्थिति हम मानव जाति की है। हम अज्ञानवश दंगे, आगजनी और बमबारी करते हैं, लेकिन हम उसके उद्देश्य से अपरिचित हैं।

54. 'हमारी नींद' कविता के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

[2014AI, 2015AI]

उत्तर- 'हमारी नींद' शीर्षक कविता के रचनाकार 'वीरेन डंगवाल' हैं। प्रस्तुत कविता 'सुविधाभोगी आराग- पसंद जीवन अथवा हमारी बेपरवाहियों के बाहर विपरीत परिस्थितियों से लगातार लड़ते हुए बढ़ते जानेवाले जीवन का चित्रण करती है।'

नींद के बावजूद प्रगति जारी रहती है। मक्खियाँ जीवन क्रम पूरा करती रहती हैं। अत्याचारी साधन जुटाने में संलग्न रहते हैं। ऐसे लोग अपनी गलती स्वीकार नहीं करते। वे इनकार करते रहते हैं।

'हमारी नींद' एक सार्थक शीर्षक है। नींद के बहाने कवि ने जागने का संदेश दिया है।

55. कहानी 'ढहते विश्वास' के शीर्षक की सार्थकता पर विचार करें।

[2014A1, 2017A1]

उत्तर-कहानीकार सातकोड़ी होता ने अपनी कहानी का शीर्षक दिया है-'ढहते विश्वास'। विश्वास एक-एक कड़ी जोड़कर बनता है। एक-एक कड़ी टूटने से विश्वास की दीवार गिर जाती है। लोगों का विश्वास भगवान पर से भी उठ जाता है। विपत्ति भी अकेले नहीं आती। विधि के निर्देशों का पालन हमेशा मानव करता आया है। मनुष्य कभी विरोध नहीं कर सका। यही उसकी विडम्बना है, यही उसका बेसहारापन है। गरीबी की मार सहते हुए में बाढ़ आ जाए या सूखा आ जाय तो संकट और गहरा हो जाता है। विश्वास ढहता नहीं। लेकिन यह कहानी ढहते विश्वास पर खड़ी की गयी है। अतः यह शीर्षक अत्यन्त प्रभावोत्पादक है। यह शीर्षक अत्यन्त प्रभविष्णु है। यह शीर्षक सार्थक एवं इस कहानी के केन्द्र में है।

निबंध लेखन

1. होली

विषय-प्रवेश होली हास-उल्लास एवं रंग और मस्ती का त्योहार है। होली का आरम्भ वसन्त पंचमी से ही शुरू हो जाता है। पेड़-पौधे हँसने लगते हैं। मलयानिल पर्वत से आती वसन्ती हवा तन में नयी ऊर्जा और मन में उमंग भरने लगती है। गीत के बोल उमड़ने लगते हैं। घरों में, खलिहानों में, चौपालों में, ढोल बजने लगते हैं। झाल झनझनाने लगते हैं। बाहर गए लोग घर आने लगते हैं।

होलिका दहन: फाल्गुन की पूर्णिमा को होलिका दहन होता है। लोग महीनों पहले से ही लकड़ी लाकर इकट्ठा करते हैं और नियत समय पर लकड़ियों के ढेर की पूजा कर उसमें आग लगा दी जाती है। किसान अपने खेतों के नये अन्न लाकर इसमें गर्म कर आपस में बाँटकर खाते हैं।

महत्व : दूसरे दिन होली होती है। रंग और गुलाल का यह विशेष दिन होता है। सवेरे रंगों से होली खेली जाती है, दोपहर के बाद गुलाल की बारी आती है। हँसी-मजाक का दौर चलता है, ठिठोली होती है। रंग और गुलाल डालकर लोग परस्पर गले मिलते हैं, खूब खाते और खूब खिलाते हैं। नये-नये वस्त्र पहनकर लोग घूमते और गाते हैं-‘खेलो रंग हमारे संग’ और ‘आज विरज में होली रे रसिया’। यों तो होली सर्वत्र खेली जाती है किंतु ब्रज की होली का अपना रंग है। वहाँ लट्टुमार होती है-रंग-रंगी नारियाँ पुरुषों को लाठियों से मारती हैं, ऐसी मार जो प्रेम-पगी होती है। इससे चोट नहीं लगती आनन्द के रंग बिखरते हैं। कहते हैं, कृष्ण होली में गोपियों पर रंग डाल छू-मंतर हो जाते थे और गोपियाँ उन्हें लट्टु लिए खोजती चलती थीं।

उपसंहार होली हमारा राष्ट्रीय त्योहार है कृषि प्रधान देश का, कृषि कर्म की सम्पन्नता का, सांस्कृतिक पर्व। आइए, इसे पूरी गरिमा से मनाएँ।

2. मेरे प्रिय कवि : तुलसीदास

भूमिका : लगभग पाँच सौ वर्षों की कालधारा जिस कवि की कृति को धूमिल न कर पाई, वह कवि हैं गोस्वामी तुलसीदास। तुलसीदास का आविर्भाव उस समय हुआ, जिस समय हिन्दू

जाति विधर्मियों के अत्याचार से त्राहि-त्राहि कर रही थी। निराशा के इस काल में इन्होंने कृष्णों के बीच आशा का संचार किया और भक्ति का दीप जलाकर पथ उजागर किया।

तुलसीदास का जीवन वृत्त: तुलसी का जन्म सम्वत् 1554 में उत्तर प्रदेश के राजापुर नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे एवं माता का नाम हुलसी था। कहा जाता है कि मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण माता-पिता ने उनका त्याग कर दिया। फलतः इनका बाल्यकाल अत्यंत दुःखमय रहा। गुरु नरहरि दास की कृपा ने इन्हें रामबोला से तुलसीदास बना दिया।

रचनाएँ एवं महत्त्व: राम के रंग में रंग कर तुलसी ने अनेक ग्रंथों की रचना की, यथा-कवितावली, दोहावली, गीतावली, रामलला नहछू वैराग्य संदीपनी, जानकी-मंगल, पार्वती-मंगल, विनय-पत्रिका और रामचरितमानस। तुलसी का व्यक्तित्व अनोखा है। इनके समक्ष कबीर, जायसी एवं सूरदास सबके सब फीके पड़ गये क्योंकि कबीर ने सधुक्कड़ी भाषा में, जायसी ने अवधी में और सूरदास ने ब्रजभाषा में रचनाएँ की किंतु तुलसी ने दोनों भाषाओं में अपनी रचना कर सबों को पीछे छोड़ दिया। इनकी रचनाओं में रस, अलंकार एवं छन्द स्वतः आ गये हैं, इसीलिए तो हरिऔध जी ने कहा है- "कविता पा तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला।"

उपसंहार: तुलसी परिस्थिति-विशेष की ऊपन थे। इस समय हिन्दू-जाति भयंकर यंत्रणा से गुजर रही थी। इन्होंने अपने विशेष महाकाव्य 'रामचरितमानस' एवं 'विनयपत्रिका' की रचना कर, भक्ति की गंगा बहाकर सबको मुग्ध किया एवं बिखरी हिन्दू जाति को एकता का पाठ पढ़ाया तथा सारे सम्प्रदायवादी विचारों का अन्त कर एक नयी दिशा दी।

3. पर्यावरण प्रदूषण प्रदूषण की समस्या

भूमिका: मनुष्य प्रकृति की सर्वोत्तम सृष्टि है। जब तक यह प्रकृति के कामों में बाधा नहीं डालता, तब तक इसका जीवन स्वाभाविक गति से चलता है। किन्तु, इधर औद्योगिक विकास के लिए इसने प्रकृति से अपना ताल-मेल समाप्त कर लिया है। नतीजा यह है कि जितनी ही तेजी से

उद्योग बढ़ रहे हैं, प्रकृति में धुआँ, गंदगी और शोर से प्रदूषण उतनी ही तेजी से बढ़ता जा रहा है। यह खतरे की घंटी है।

प्रदूषण के कारण एवं परिणाम आज के युग में यंत्रों, मोटरगाड़ियों, रेलों तथा कल-कारखानों पर ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा है। परिणामस्वरूप धुएँ के कारण कार्बन मोनोऑक्साइड की मात्रा बढ़ गई है और ऑक्सीजन की मात्रा कम होती जा रही है। गौरतलब है कि 860 किलोमीटर चलने पर एक मोटर जितनी ऑक्सीजन का प्रयोग करता है, उतनी ऑक्सीजन, मनुष्य को एक वर्ष के लिए चाहिए। हवाई जहाज, तेलशोधक, चीनी मिट्टी, चमड़ा आदि कारखानों में ईंधन जलने से जो धुआँ होता है, उससे अधिक प्रदूषण होता है। घनी आबादी वाले शहर इससे ज्यादा प्रभावित होते हैं। टोकियो में तो कार्य पर तैनात सिपाही के लिए जगह-जगह पर ऑक्सीजन के सिलिंडर लगे होते हैं ताकि जरूरत पड़ने पर वह ऑक्सीजन ले सके। इंग्लैंड में चार घंटे में यातायात पुलिस की हालत खराब हो जाती है।

4. 'वृक्षारोपण'

भूमिका : वृक्ष हमारे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वह हमेशा चौकन्ना रहकर हमारी रक्षा के लिए तत्पर रहता है। इसके महत्त्व का बखान शब्दों में नहीं किया जा सकता है। वृक्ष जन्म लेने से लेकर मृत्योपरांत हमारे उपयोग में आता है लेकिन हमलोगों को भी उसकी महत्ता समझनी चाहिए। भोजन के लिए फल, जलावन की लकड़ी, घर निर्माण के लिए लकड़ी, बिछावन के लिए लकड़ी यहाँ तक कि बूढ़े का सहारा भी एक लकड़ी ही है। जीवन के लिए शुद्ध हवा भी तो वृक्ष ही देता है। इसलिए कटाई के साथ-साथ रोपाई भी आवश्यक है।

वृक्ष की महत्ता : यदि पूरी धरती को मरुस्थल हो जाने से बचाना है तो हमें वृक्ष लगाना चाहिए। अंधाधुंध हम उसे काटते जा रहे हैं। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते जा रहे हैं। लेकिन वृक्ष लगाना भी है इस पर किसी का ध्यान नहीं है। कल-कारखानों से निकलने वाली कार्बन डायऑक्साइड और मोनो ऑक्साईड गैसों वायु में घुलकर हमारे जीवन को निगलने के लिए सुरसा की तरह मुँह फैलाए जा रही है। जीवन शक्ति प्रदान करनेवाली ऑक्सीजन घटते-घटते इतना कम हो जाएगी कि दम घुट कर जीव मर जाएगा। प्रकृति पर नियंत्रण और जीवनशक्ति

को बनाए रखने के लिए वृक्ष का लगाना आवश्यक हो गया है। इसकी महत्ता को हम नकार नहीं सकते हैं। नियंत्रण और जीवनशक्ति को बनाए रखने के लिए वृक्ष का लगाना आवश्यक हो गया है। इसकी महत्ता को हम नकार नहीं सकते हैं।

लाभ : आज हमें मीठे पानी का स्रोत उपलब्ध है। यह तभी तक है, जब तक वन है। शुद्ध वायु, मीठे फल, आवश्यक लकड़ियाँ, जड़ी-बूटी, औषधीय पौधे, पशुओं की दुर्लभ प्रजातियाँ, रंग-बिरंगी चिड़ियाँ और उन पशुओं और पक्षियों से प्राप्त होने वाले खाल बाल, पंख सब हमारे लिए आवश्यक वस्तुओं के निर्माण में काम आते हैं। 1952 में सरकार ने "वन नीति" बनाई थी। वन महोत्सव मनाए गए। वृक्ष से मानव को क्या-क्या लाभ मिलता है इसके लिए डॉक्यूमेंट्री निर्मित की गई ताकि लोग आसानी से समझ सके।

5. परोपकार

विचार बिंदु - 1. भूमिका 2. महत्त्व 3. उपसंहार।

भूमिका-परोपकार शब्द 'पर + उपकार' दो शब्दों के मेल से बना है। परोपकार का अर्थ होता है दूसरों का भला करना या दूसरों की सहायता करना। परोपकार सहानुभूति का पर्याय है। यह सज्जनों की विभूति होती है। समाज में परोपकार से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता। यह एक ऐसा मानवीय गुण है जिसके द्वारा शत्रु भी मित्र बन जाता है।

परोपकार भारतीय संस्कृति है, जिसकी शिक्षा हमें प्रकृति से मिली है। प्रकृति के प्रत्येक कार्य में हमें सदैव परोपकार की भावना निहित दिखाई पड़ती है। नदियाँ अपना जल स्वयं न पीकर दूसरों की प्यास बुझाती हैं, वृक्ष अपने फलों को दूसरों के लिए अर्पण करते हैं, बादल पानी बरसा कर धरती की प्यास बुझाते हैं, सूर्य तथा चंद्रमा भी अपने प्रकाश को दूसरों में बांट देते हैं। इसी प्रकार सज्जनों का जीवन भी परोपकार में ही लगा रहता है। परोपकार एक उत्तम आदर्श का प्रतीक है।

महत्त्व-मानव जीवन में परोपकार का बहुत महत्त्व है। इससे मनुष्य की पहचान होती है। परोपकार की महिमा अपरम्पार है। परोपकार से आत्मिक व मानसिक शान्ति मिलती है। परोपकारी पुरुष अपने जीवन काल के बाद भी याद रहते हैं। दानवीर कर्ण, भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी, गुरुनानक, महर्षि दयानन्द, विनोबा भावे, महात्मा गाँधी आदि इसके उदाहरण हैं। परोपकार की भावना लोगों में भाईचारे की भावना को बढ़ावा देती है। इसके द्वारा सुख, शान्ति, स्नेह, सहानुभूति आदि गुणों से मानव जीवन परिपूर्ण हो जाता है। परोपकार के द्वारा ईश्वर की समीपता प्राप्त होती है। इस प्रकार यह ईश्वर प्राप्ति का एक सोपान भी है।

उपसंहार-मनुष्य जीवन ईश्वर का आशीर्वाद है। इसलिए हमें अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुरूप जरूरतमंद लोगों की सेवा और उनके दुख दर्द को मिटाने का प्रयास करना चाहिए। हमें अपने मित्रों, परिचितों और अपरिचितों के लिए हमेशा परोपकार की भावना रखनी चाहिए। अपने सुनहरे और समृद्ध भविष्य के लिए अपनी भावी पीढ़ी को बचपन से ही परोपकार के पाठ सिखाने चाहिए। परोपकार के लिए किये गये कार्य के आनंद की तुलना किसी भी भौतिक सुख से नहीं की जा सकती है।

संत कबीर ने ठीक ही कहा है-

धन रहै न जोबन रहे, रहै न गांव न ढांव। कबीर जग में जस रहे, करिदे किसी का काम ।।

6. पुस्तकालय

विचार बिंदु

1. भूमिका
2. महत्त्व
3. उपयोगिता
4. हानि
5. निष्कर्ष।

भूमिका-पुस्तकें मानव की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं जो बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक उसका सहारा होती हैं। पुस्तकों के कारण ही आज शिक्षा पद्धति सुदृढ़ हो पाई है। लोगों में ज्ञान और अनुभव का विस्तार हुआ है।

किसी भी व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं कि हर तरह के पुस्तकों का संग्रह कर रख सके। अंत ज्ञान की गंगा सबके लिए सुलभ हो सके परंपरा की चिन्तन-सम्पदा हस्तगत हो सके, इसके लिए पुस्तकालय की आवश्यकता महसूस हुई।

पुस्तकालय का अर्थ होता है- पुस्तकों का घर। यहाँ पर ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, राजनीति-विज्ञान आदि विषयों की अलग-अलग भाषाओं में पुस्तकों का संग्रह होता है। जिसका उपयोग हम आगे आने वाले जीवन को बेहतर बनाने के लिए कर सकते हैं।

महत्त्व-पुस्तकालय का महत्त्व मानव जीवन में प्राचीन काल से रही है। यहाँ संसार के सर्वोत्तम ज्ञान और विचारों का संगम होता है। किसी प्राचीन विषय का अध्ययन करना हो या वर्तमान विषय का, विज्ञान और तकनीकी का अध्ययन करना हो या किसी कला या साहित्य का कविताओं की कोई अच्छी पुस्तक चाहिए या किसी महापुरुष की जीवनी सब कुछ एक स्थान यानी पुस्तकालय में हमें मिल जाती है।

पुस्तकालय हमारे विद्यार्थी जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनके माध्यम से हमें देश-विदेश के महान लेखकों की लिखी हुई पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिल जाता है। विद्यार्थी यहाँ पर आकर आराम से शांत माहौल में पुस्तकें पढ़ सकता है और अपने ज्ञान के जिज्ञासा को शांत कर सकता है।

उपयोगिता-पुस्तकालय ज्ञान का असीम भंडार है। यह एक ऐसा स्रोत है जहाँ से ज्ञान की निर्मल धारा सदैव बहती रहती है। पुस्तकालय हमें प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल के विचारों से अवगत कराती है। कोई व्यक्ति एक सीमा तक ही पुस्तकें खरीद सकता है। सभी प्रकाशित पुस्तकें खरीदना सबके बस की बात नहीं। गरीब हो या अमीर, जो भी शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए पुस्तकालय एक सच्चा मित्र की तरह हैं। इसलिए पुस्तकालय की उपयोगिता सदैव बनी रहेगी।

हानि-पुस्तकालयों से हानियाँ भी होती हैं, यह सर्वथा असंगत होगा, किन्तु कुछ लोग अच्छी वस्तु का दुरुपयोग करके उसे हानिकारक बना देते हैं। इसी प्रकार कुछ विद्यार्थी पुस्तकालय में

जाकर मनोरंजन या कहानियाँ पढ़ते रहते हैं और अपनी पाठ्य - पुस्तकों की उपेक्षा कर देते हैं। जिसका परिणाम उनके लिए हानिकारक होता है।

पुस्तकालय में अक्सर देखा गया है कि कुछ लोग अच्छी-अच्छी पुस्तकों को चुरा लेते हैं या उसका पेज फाड़ लेते हैं। ऐसे में वे न सिर्फ दूसरों का नुकसान करते हैं बल्कि खुद का भी नुकसान नुकसान करते हैं। ज्योति प्रदान करते हैं। इसमें पुस्तकालय का कोई दोष नहीं है, वे ज्ञान के भंडार हैं। हमें ज्ञान की

निष्कर्ष-पुस्तकालय वास्तव में ज्ञान का असीम भंडार है। देश की शिक्षित जनता के लिए उन्नति का सर्वोत्तम साधन है। भारत वर्ष में अच्छे पुस्तकालयों की संख्या पर्याप्त नहीं है। भारत सरकार इस दिशा में प्रत्यनशील है। वास्तव में पुस्तकें मनुष्य की सच्ची मित्र सदगुरु और जीवन पथ की संरक्षिका हैं।

7. सरस्वती पूजा

विचार बिंदु 1. प्रारंभ 2. पर्याय 3. उत्सव 4. महात्प्य।

प्रारंभ-माँ सरस्वती विद्या, ज्ञान और कला की देवी हैं। सरस्वती पूजा के ख्याल से ही छात्र-छात्राओं में जोश का संचार हो जाता है। प्रत्येक शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों द्वारा पूरी तन्मयता के साथ सरस्वती पूजा का आयोजन किया जाता है। बड़े-बूढ़े भी बच्चों का पूरा सहयोग देते हैं।

सरस्वती पूजा माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है। यह जनवरी या फरवरी माह में आता है। इस पूजा में माँ सरस्वती की प्रतिमा एक या दो दिन के लिए बैठाई जाती है। छात्र-छात्राएँ सरस्वती पूजा के दिन सुबह-सुबह नहा-धोकर विद्यादायनी माँ सरस्वती की पूजा करते हैं और फिर प्रसाद ग्रहण करते हैं। इस पर्व को वसन्तोत्सव, वसंत पंचमी, श्री पंचमी भी कहा जाता है।

पर्याय- प्राचीन वाङ्मय में सरस्वती को वागाधिष्ठात्री देवी अर्थात् विद्या एवं बुद्धि का पर्याय माना गया है। कहा जाता है कि इनका वस्त्र शुभ्र अर्थात् उजला और धवल है जो सादगी एवं स्वच्छता का प्रतीक है। इनका वाहन हंस है जो दूध का दूध और पानी का पानी कर देने के विवेक का परिचायक है। इनके एक हाथ में पुस्तक है जो विश्व के समस्त ज्ञान के प्रकाश स्रोत का पर्याय है। इनके एक हाथ में वीणा है जो यह प्रेरणा देती है कि हमें अपने जीवन में ज्ञान के साथ-साथ संगीत, एवं स्वस्थ मनोरंजन, आत्मा तक को पवित्र कर देने वाली झंकार की भी साधना करनी चाहिए। जीवन की संपूर्णता सहज ज्ञान के साथ संपूर्ण लय में है, दिव्य तान में है, निनाद में है।

उत्सव - सरस्वती पूजा का उत्सव पूरे भारत में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। विद्यार्थी वहाँ एकत्र होकर सामूहिक रूप से पूजा करते हैं। शिक्षण संस्थानों के अतिरिक्त गाँवों एवं मुहल्लों में भी सरस्वती पूजा अत्यन्त श्रद्धा से की जाती है। जगह-जगह पर माँ सरस्वती की प्रतिमाएँ स्थापित की जाती हैं। तोरणों एवं फूल पत्तियों से सजाकर माता की पूजा पूरी विधि-विधान से की जाती है। दिन भर पूजा एवं प्रसाद वितरण का दौर चलता रहता है। रात में लोग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेते हैं।

महात्सव- वसंत पंचमी में शताब्दियों से माता सरस्वती की पूजा होती आ रही है। यह एक सांस्कृतिक पर्व है। माता सरस्वती 'सत्यम्', 'शिवम्', 'सुन्दरम्' के रूप में संसार में सुख, शांति और सौन्दर्य का सृजन करती है।

यह दिन संगीत, कला आदि के ज्ञान अर्जन का शुभारंभ करने के लिए उत्तम होता है। ऐसी भी मान्यता है कि इस दिन सरस्वती पूजा करने से देवी प्रसन्न होती है और भक्तों को ज्ञान, संगीत, कला आदि में निपुण होने का आशीष देती है।

8. महात्मा गाँधी

विचार बिंदु - 1. भूमिका 2. बाल्यकाल 3. राजनीति 4. महत्ता 5. उपसंहार।

भूमिका- महात्मा गाँधी भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं अध्यात्मिक नेता थे। वे उत्तम विचारक और श्रेष्ठ समाज सुधारक थे। इन्होंने सत्याग्रह, शांति एवं अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। वे जीवन के अंतिम सांस तक देश की सेवा करते रहे। - उनके महान कार्यों की वजह से उन्हें देश में राष्ट्रपिता यानी (Father of Nation) की उपाधि दी गयी है।

विश्व पटल पर महात्मा गाँधी एक नाम नहीं अपितु शांति और अहिंसा के प्रतीक हैं। तभी तो संयुक्त राष्ट्रसंघ ने वर्ष 2007 से गाँधी जयंती को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की है।

बाल्यकाल सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई० को पोरबंदर गुजरात में हुआ था। इनके पिता का नाम करमचंद गाँधी तथा माता का नाम पुतलीबाई था। इनके पिता काठियावाड़ा के छोटे से रियासत (पोरबंदर) के दिवान थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर से संपन्न हुई। हाई स्कूल की परीक्षा इन्होंने राजकोट से दिया और मैट्रिक की परीक्षा इन्होंने अहमदाबाद से दिया। बाल्यकाल से ही ये औसत विद्यार्थी थे, पढ़ाई में मन नहीं लगता लेकिन

उचित और अनुचित का फर्क पता था। से की। राजनीति-गाँधी जी सामाजिक क्रांतिकारी जीवन की शुरुआत दक्षिण अफ्रीका

1915 ई० में भारतवर्ष लौटने पर गाँधीजी यहाँ की भारतीय राजनीति में पूरी तरह कूद पड़े। 1917 के चम्पारण, आंदोलन ने इन्हें राष्ट्रीय स्तर का नेता के रूप में प्रसिद्धि दिलाई। भारत के स्वतंत्रता में उनका योगदान तब तक बना रहा जब तक वे भारत को पराधीनता के जंजीर से मुक्त न करवा दिया।

महत्ता-गाँधीजी का अवतरण उस समय हुआ था जब भारतमाता गुलामी की बेड़ी में जकड़ी हुई थी। उन्होंने देश की गरीबी और गुलामी देखी, अंग्रेजों के अत्याचार और उनका क्रूर शासन देखा। गाँधीजी ऐसे महामानव थे जिन्होंने देश की आजादी में अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। इन्होंने साबरमती आश्रम में अपना जीवन गुजारा और परम्परागत भारतीय पोशाक

धोती व सूत से बनी शाल पहनी। जिसे वे स्वयं चरखे पर सूत काटकर अपने हाथों से बनाते थे। उन्होंने सादा-शाकाहारी भोजन खाया और आत्मशुद्धि के लिए लम्बे-लम्बे उपवास रखा।

उपसंहार-गाँधीजी विश्व-बंधुत्व के लिए पोषक एवं मानव मात्र के हित-चिन्तक थे। इन्होंने अपना जीवन सत्य या सच्चाई की व्यापक खोज में समर्पित कर दिया। ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी महात्मा गाँधी की 30 जनवरी, 1948 को नई दिल्ली के बिड़ला भवन में नाथूराम गोडसे द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी गई। पूरा भारत अनाथ हो गया। लेकिन 'गाँधीजी की जय' आज भी हमारे प्राणों में नया जोश और उत्साह भरता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी अपने अच्छे कामों और अपने आदर्श विचारों के कारण हमेशा याद किये जाते हैं और वे हमारे दिलों में राज करते हैं।

9. खेल का महत्त्व

विचार बिंदु 1. भूमिका 2. खेल के प्रकार 3. महत्त्व

4. लाभ-हानि

5. उपसंहार।

भूमिका मनुष्य के लिए अच्छे स्वास्थ्य का होना अत्यंत आवश्यक है। वैदिक काल से ही हमारे पूर्वजों ने 'निरोगी काया' अर्थात् स्वस्थ शरीर को प्रमुख सुख माना है। खेल अथवा व्यायाम स्वस्थ शरीर के लिए परम आवश्यक है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खेल अथवा व्यायाम उतना ही आवश्यक है जितना जीवन के लिए भोजन व पानी।

खेल के प्रकार खेलों की प्रकृति के आधार पर हम उन्हें दो भागों अंतर्क्षेत्रीय खेल (indoor game) एवं बहिर्क्षेत्रीय खेल (out door game) में विभाजित कर सकते हैं। शतरंज, टेबल टेनिस, बल-टेनिस, कैरम, लूडो आदि अंतर्क्षेत्रीय खेल हैं वहीं हॉकी, फुटबॉल, क्रिकेट आदि बहिर्क्षेत्रीय खेल कहलाते हैं।

हॉकी हमारा राष्ट्रीय खेल है। इस खेल में हम कई वर्षों तक विश्व विजेता रहे हैं परंतु आजकल देश में क्रिकेट, शतरंज व टेनिस जैसे खेलों की लोकप्रियता बढ़ रही है।

महत्त्व-विद्यार्थी जीवन मानव जीवन की आधारशिला है। इस काल में आत्मसात की गई समस्त अच्छी बुरी आदतों का मानव जीवन पर स्थाई प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के साथ-साथ खेल मुनष्य के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। विद्यार्थी जो अपनी पढ़ाई के साथ खेलों को बराबर महत्त्व देते हैं वे प्रायः कुशाग्र बुद्धि के होते हैं। खिलाड़ी खेल-खेल में ही जीवन के संघर्षों और उतार-चढ़ाव से भली-भाँति परिचित हो जाता है। खेल के आरंभ से अंत तक उसका मन आशा और निराशा के डोले पर झूलता रहता है। कभी विजय उसे सामने दिख पड़ती है तो कभी आती हुई जीत झट आँखों से ओझल हो जाती है, पर वह निराश नहीं होता। निष्काम कर्म योगी के समान अपने खेल में जुटा रहता है। स्पष्ट है कि ऐसा व्यक्ति जीवन के संघर्षों और उतार चढ़ाव से भयभीत न होकर डटकर उसका सामना करेगा।

लाभ-हानि-खेल व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से स्वस्थ और अच्छा बनाता है। यह मनोरंजन का महान स्रोत है जो शरीर और मन को तरोताजा करता है। खेल-खेल में खिलाड़ी जीवन के संघर्षों और उतार चढ़ाव से भली-भाँति परिचित हो जाता है। खेल में दलीय अनुशासन और सहयोग की भावना का स्वतः विकास हो जाता है।

खेल के मैदान में खिलाड़ी अपनी स्वतंत्र सत्ता भूल जाता है। खेल में किसी एक खिलाड़ी की जीत या हार नहीं होती, जीत-हार पूरी टीम की होती है जो सभी खिलाड़ियों की टीम भावना सिखाता है। लेकिन जब टीम का कोई सदस्य विपक्षी टीम से मिलकर परिणाम को प्रभावित करता है तो खेल भावना को हानि पहुँचती है। जब इस भ्रष्टाचार का पता चलता है तो दर्शक अपने को ठगा महसूस करते हैं। इससे खिलाड़ियों के प्रति लोगों को सम्मान कम जाता है साथ ही देश की छवि धूमिल होती है।

उपसंहार खेल हमें सुन्दर स्वस्थ, कंचन काया के साथ ही नाम, धन और प्रसिद्धि दिलाते हैं। भारत में शायद ही कोई होगा जो सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल आदि का नाम नहीं जानता होगा। उपरोक्त सभी खिलाड़ियों के नाम समूचे विश्व में आदर के साथ लिये जाते हैं। खेलों के माध्यम से व्यक्ति को विभिन्न पुरस्कार भी प्राप्त होते हैं। भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान सचिन तेंदुलकर को खेलों की बदौलत ही मिला।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि यदि व्यक्ति लगन से खेले और अपना श्रेष्ठ समय देने का प्रयास करे तो खेल समाज में उसे सफलता का वो शिखर दिला सकता है जो बहुत लोगों के लिए स्वपन के समान है।

10. कम्प्यूटर

विचार बिन्दु- (i) भूमिका, (ii) आवश्यकता, (iii) लाभ, (iv) हानि, (v) निष्कर्ष।

भूमिका आज कम्प्यूटर क्रांति का युग है। कम्प्यूटर को विद्युत मस्तिष्क की संज्ञा दी जाती है। यह युक्ति अधिक शुद्ध एवं तीव्र है। इसमें प्रदत्तों एवं सूचनाओं का भण्डारण किया जाता है। इनका विश्लेषण करके शुद्ध परिणाम प्राप्त किये जाते हैं। यह कह सकते हैं कि कम्प्यूटर एक ऐसी इलेक्ट्रॉनिक युक्ति है जो किसी भी प्रकार के सभी आँकड़ों को व्यवस्थित व नियंत्रित तो करता ही है साथ ही उक्त समय में पूर्ण शुद्धता के साथ गणना भी कर सकता है।

आवश्यकता कम्प्यूटर हमारा जीवन साथी है। हाथ में रिमोट हो तो साथ में दुनिया होती है। जिस संदेश को पाने में महीनों लग जाते थे, वे क्षण भर में हमारे पास आ जाते हैं। आज तमाम अनुत्तरित प्रश्नों का हल कम्प्यूटर से क्षण-मात्र में किए जा सकते हैं।

कम्प्यूटर के कारण फाइलों की आवश्यकता कम हुई है। कार्यालय की सारी गतिविधियाँ पेन ड्राइव में सुरक्षित रखी जाती है। कार्यालय के दैनिक कार्यों का निपटारा कम्प्यूटर द्वारा ही किया जा रहा है जिससे कार्यालय की कार्य क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ समय की बचत भी हो रही है। आने वाले समय में समाचार पत्र भी इंटरनेट के माध्यम से पढ़ने की व्यवस्था हो जाएगी।

लाभ इसका सदुपयोग तथा इससे लाभ- कम्प्यूटर ने धरती और आकाश को एक कर दिया है। चाहे आप हवाई जहाज में यात्रा कर रहे हों, अथवा रॉकेट द्वारा नये-नये ग्रहों की खोज कर रहे हों, आपका हाथ कम्प्यूटर के साथ है। आज कम्प्यूटर के चलते एक दिन में हजारों पुस्तकें, हजारों अखबार और पत्रिकाएँ छप कर तैयार हो जाती हैं। प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सब कम्प्यूटर के ही चट्टे-बट्टे हैं। फिल्म, आपरेशन थियेटर, टेलीफोन, रेल, फ्रिज, वाशिंग मशीन

आदि कम्प्यूटर से संचालित होते हैं। इस तरह वर्तमान ज्ञान-विज्ञान सब कम्प्यूटर का चमत्कार है।

हानि-इंसानों के लिए कम्प्यूटर के सेंकडों फायदे हैं तो हानियाँ भी है। जैसे-साइबर उपराध जिसकी पहुँच बच्चों और विद्यार्थियों तक असानी से हो पाती है।

निष्कर्ष कम्प्यूटर के चमत्कार से आँखें बंद नहीं की जा सकती। उसकी उपयोगिता नजर अंदाज नहीं की जा सकती। आज कम्प्यूटर 'सुपर माइंड' की तरह कार्य कर रहा है। कठिन जीवन को सरल बनाने में कम्प्यूटर का योगदान महत्वपूर्ण है। आइए, आज ही हम कम्प्यूटर सीखें और अपनी किस्मत की तस्वीर बदलें।

आवेदन पत्र

**1. अपने विद्यालय के प्रधानाध्यापक प्रधानाचार्य को अवकाश के आवेदन-पत्र लिखिए।
अथवा, अपने प्रधानाध्यापक को पाँच दिनों की छुट्टी के लिये आवेदन लिखें।**

सेवा में,
प्रधानाध्यापक

केन्द्रीय विद्यालय, कंकड़बाग, पटना महोदय,

निवेदन है कि मेरे चाचा जी का शुभ-विवाह 17 फरवरी, 2026 को जमशेदपुर में होना सुनिश्चित हुआ है। मुझे भी उनकी बारात में जाना है। अतएव, आपसे अनुरोध है कि दिनांक 20 एवं 24 फरवरी, 2021 को कक्षा से अनुपस्थित रहने (अवकाश देने) की अनुमति दी जाय। आपकी इस कृपा के लिए आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र
दिलीप
कक्षा -X
क्रम संख्या-15

17 फरवरी, 2026

2. अपने प्रधानाध्यापक के पास एक आवेदन पत्र लिखें, जिसमें विद्यालय की साफ-सफाई करवाने का निवेदन किया गया हो।

उत्तर- सेवा में,

प्रधानाध्यापक महोदय

रेलवे ऐंडेड 30 विद्यालय,

विषय: विद्यालय में साफ-सफाई की व्यवस्था करने के संबंध में।

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय का नियमित छात्र हूँ। विद्यालय परिसर में हर जगह गंदगी फैला हुआ है। कक्षाओं में प्रतिदिन सफाई नहीं होता है। जिससे बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। बच्चे हमेशा बीमार हो जाते हैं।

अतः श्रीमान् से अनुरोध है कि विद्यालय में समूचित सफाई की व्यवस्था करने की कृपा की जाय ताकि बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित न हो।

दिनांक 15 अप्रैल, 2025

आपका आज्ञाकारी छात्र- अर्जित आदित्य

वर्ग - दशम्

क्रमांक - 02

3.. अपने पिता के पास एक पत्र लिखें जिसमें आपकी वार्षिक परीक्षा की तैयारी का वर्णन हो।

उत्तर-

आदरणीय पिताजी सादर चरण स्पर्श

कल आपका पत्र मिला। आपकी कुशलता जानकर प्रसन्नता हुई। मैं भी यहाँ स्वस्थ एवं सकुशल हूँ। आपने अपने पत्र में मेरी वार्षिक परीक्षा की तैयारी के संबंध में पूछा है।

पिता जी! बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा आयोजित मैट्रिक की वार्षिक परीक्षा अगले माह 15 फरवरी से प्रारंभ होने जा रही है। मैं इस परीक्षा की तैयारी में प्राणपण से लगा हुआ हूँ। मैंने अपने सारे विषयों की तैयारी कर लिया हूँ। अपने सारे पुस्तकों को पूरे मनोयोग से पढ़ लिया हूँ। परीक्षा शेष बचे दिनों में तैयार किए गए प्रश्नोत्तरी की पुनरावृत्त कर लूँगा।

मैं अपने एक-एक पल का सदुपयोग कर रहा हूँ। मैं परीक्षा देने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके उम्मीद के अनुरूप 90% से अधिक अंकों से उत्तीर्णता प्राप्त करूँगा। मेरे तरफ से माताजी को भी चरण स्पर्श।

दिनांक 17.01.2026

आपका प्यारा पुत्र अमन राज

4. अपने प्रधानाध्यापक के पास एक आवेदन पत्र लिखें, जिले परीक्षा शुल्क माफ करने का निवेदन किया गया हो।

उत्तर-सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय क्षत्रिय उच्च विद्यालय फतेहपुर, पटना-7 विषय: परीक्षा शुल्क माफ करने हेतु आवेदन पत्र।

द्वारा: वर्ग शिक्षक महोदय

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मैं दसवीं कक्षा का एक निर्धन छात्र हूँ। मेरी पिताजी पिछले तीन माह से बीमार हैं। जिस कारण से उनके इलाज में काफी पैसा खर्च हो गया है और आमदनी भी बन्द है। ऐसी परिस्थिति में मैं परीक्षा शुल्क जमा -करने में असमर्थ हूँ।

अतः श्रीमान् से अनुरोध है कि मेरे आवेदन पर सहानभूतिपूर्वक विचार करते हुए मेरा परीक्षा शुल्क माफ करने की कृपा की जाए ताकि मैं माध्यमिक उत्प्रेषण परीक्षा में शामिल हो सकूँ और अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। इसके लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र सत्येन्द्र कुमार वर्ग-X रोल न0-04

5.. अपने छोटे भाई को जन्मदिन के उपलक्ष्य में एक बधाई पत्र लिखिए।

उत्तर-प्रिय अनुज शुभाशीर्वाद

कल तुम्हारा पत्र मिला। पत्र में तुमने मुझे घर आने की गुजारिश की है। मुझे याद है कि 18 मई को मेरे सबसे प्यारे और छोटे भाई का जन्मदिन है। जन्मदिन के उपलक्ष्य में मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं प्रभु से कामना करता हूँ कि तुम्हारा भावी जीवन सुखद और मंगलमय हो। ईश्वर तुम्हारी संपूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करें। इस शुभ अवसर के उपलक्ष्य में मैं तुम्हारे लिए एक उपहार निबंधित डाक से भेज रहा हूँ।

देश-प्रदेश में तेजी से पाँव पसारती महामारी के कारण मैं इस बार तुम्हारे जन्मदिन पर उपस्थित नहीं हो सकता। आशा है इसे अन्यथा नहीं लोगे मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है। मम्मी, पापा को चरण स्पर्श।

संवाद लेखन

1. इंटरनेट की उपयोगिता के बारे में दो छात्रों के बीच संवाद को लिखिए।

नयन:सुप्रभात मित्र! पढ़ाई कैसी चल रही है?

राजीव:सुप्रभात मित्र! अभी भी मेरी पढ़ाई इंटरनेट के माध्यम से ऑन-लाइन ही चल रही है।

नयन:वर्तमान समय में सिर्फ पढ़ाई ही नहीं बल्कि बहुत सारे काम इंटरनेट के माध्यम से हो रहे हैं।

राजीव:हाँ दोस्त! इंटरनेट भी कमाल की तकनीक है। कोरोना काल में जहाँ सारे गतिविधि ठप है वहाँ इसने हमारे जीवन को सरल बना दिया।

तुम अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं हो, आजकल आधी से अधिक

नयन:आबादी इंटरनेट की सुविधा का भरपूर इस्तेमाल कर रही है।

राजीव:हाँ भाई मैं तुम्हारे बात से सहमत हूँ। शिक्षा, मनोरंजन, चिकित्सा, बैंकिंग, यातायात इत्यादि सभी क्षेत्रों में इंटरनेट के माध्यम से ही काम हो रहे हैं।

हाँ भाई! इंटरनेट वर्तमान समय में हमारी आवश्यकता है। इसके बिना जीवन मुश्किल हो जाएगा।

नयन:हाँ भाई! यह सब विज्ञान का चमत्कार है।

2. प्रदूषण की समस्या को केन्द्र में रखते हुए दो मित्रों के बीच संवाद लिखें।

उत्तर-

राकेश -क्या हुआ निलेश, तुम उदास क्यों हो?

निलेश:हाँ राकेश, माँ की तबियत ठीक नहीं है।

राकेश:क्या हुआ है?

निलेश :सांस लेने में परेशानी हो रही, इसलिए अस्पताल में हैं।

राकेश -डॉक्टर ने क्या बताया?

निलेश :प्रदूषित हवा के कारण इन्फेक्शन हो गया है। डॉक्टर ने इन्हें शुद्ध वातावरण में रखने की सलाह दी है।

राकेश :यहाँ इतनी अधिक गाड़ियाँ चलती हैं कि वातावरण दूषित हो गया है। हवा में जहरीली गैस की मात्रा बढ़ती जा रही है।

निलेश :समझ में नहीं आता, क्या करूँ?

राकेश: मेरी मानो कुछ दिनों के लिए उन्हें गाँव लेकर चले जाओ। गाँव में इतना प्रदूषण नहीं है। गाड़ियों का शोर भी नहीं है। शुद्ध और स्वच्छ हवा में रहेंगी तो उनका स्वस्थ ठीक हो जायेगा।

निलेश -तुम ठीक कह रहे हो भाई। गाँव में इतनी गाड़ियाँ नहीं चलतीं, धूल और धुआँ भी नहीं है। इसलिए शुद्ध वातावरण मिलेगा।

राकेश :तुम चिंता मत करो। आंटी ठीक हो जायेगी। चलो, मैं भी तुम्हारे साथ अस्पताल चलता हूँ।